ऊँ गं गणपतये नम

शुभ 卐 लाभ

जन्मपत्रिका मेलापक

Akash

卐

Sneha

vedmuni

www.vedmuni.com

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर–वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर–वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

Model: Manubhai-M1

SrNo: 110-120-101-1102 / 3 Date: 22/11/2020

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
25/12/1995	जन्म तिथि	14/02/1996
सोमवार	दिन	बुधवार
घंटे 20:30:00	जन्म समय	17:35:00 घंटे
घटी 33:16:10	जन्म समय(घटी)	26:24:14 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Pune
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	18:34:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	73:58:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:34:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:11:31	सूर्योदय	07:03:09
17:30:30	सूर्यास्त	18:33:44
23:48:10	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:18

कर्क	लग्न	कर्क
चन्द्र	लग्न लग्नाधिपति	चन्द्र
मकर	राशि	वृश्चिक
शनि	राशि–स्वामी	मंगल
धनिष्ठा	नक्षत्र	ज्येष्ठा
मंगल	नक्षत्र स्वामी	बुध
2	चरण	4
वज्र	योग	हर्षण
बव	करण	विष्टि
गी–गीत	जन्म नामाक्षर	यू–युक्ता
मकर	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ
वैश्य	वर्ण	विप्र
जलचर	वश्य	कीटक
सिंह	योनि	मृग
राक्षस	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	आद्य
मार्जार	वर्ग	मृग

vedmuni
www.vedmuni.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
मंगल 3वर्ष 11मा 10दि		19:10:14	कर्क	लग्न	कर्क	18:40:06	बुध 0वर्ष 10मा 27दि	
गुरु		09:32:23	धनु	सूर्य	कुंभ	01:16:27	शुक्र	
05/12/2017		29:09:07	मक	चंद्र	वृश्चि	29:17:14	12/01/2004	
05/12/2033		25:24:28	धनु	मंगल	कुंभ	05:24:45	12/01/2024	
गुरु	23/01/2020	26:50:21	धनु	बुध	मक	05:30:24	शुक्र	13/05/2007
शनि	05/08/2022	04:13:33	धनु	गुरु	धनु	15:09:02	सूर्य	13/05/2008
बुध	10/11/2024	10:57:46	मक	शुक्र	मीन	12:33:47	चन्द्र	11/01/2010
केतु	17/10/2025	25:11:35	कुंभ	शनि	कुंभ	29:46:01	मंगल	14/03/2011
शुक्र	17/06/2028	29:51:42	कन्या व	राहु व	कन्या	24:51:26	राहु	13/03/2014
सूर्य	05/04/2029	29:51:42	मीन व	केतु व	मीन	24:51:26	गुरु	11/11/2016
चन्द्र	05/08/2030	05:11:38	मक	हर्ष	मक	08:07:13	शनि	12/01/2020
मंगल	12/07/2031	00:38:36	मक	नेप	मक	02:31:18	बुध	12/11/2022
राहु	05/12/2033	07:55:44	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	09:11:20	केतु	12/01/2024

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु स्पष्ट

23:48:10 चित्रपक्षीय अयनांश **23:48:18**

लग्न–चलित

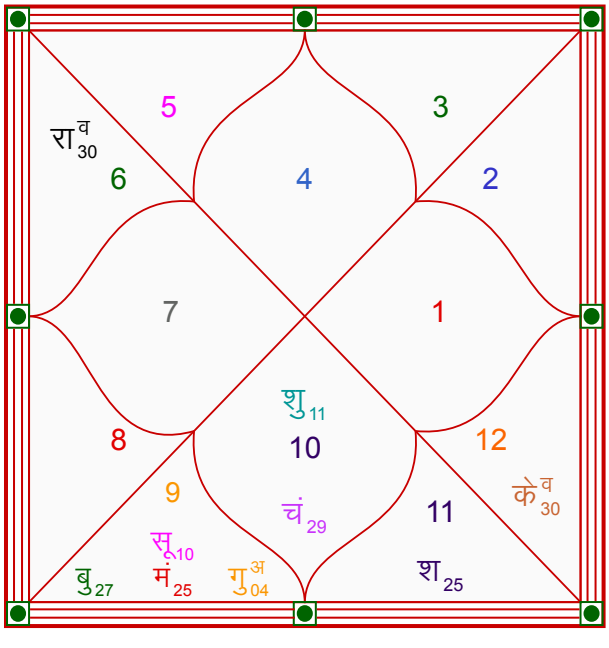

लग्न–चलित

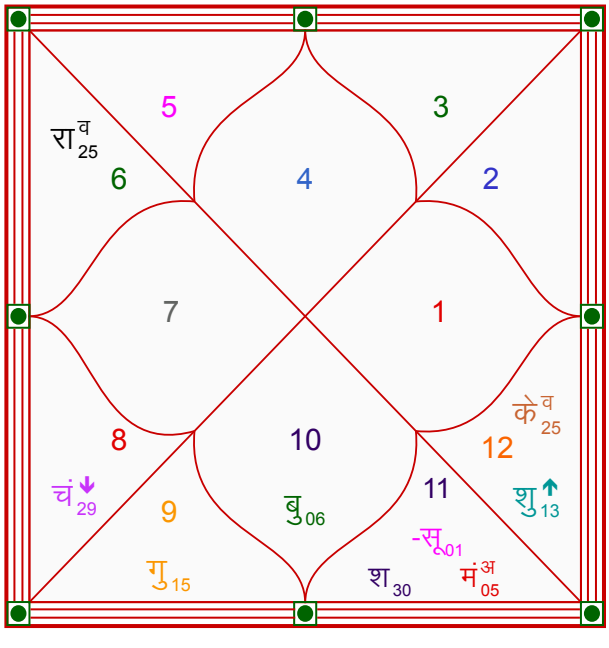

Akash

Sneha

चन्द्र कुंडली

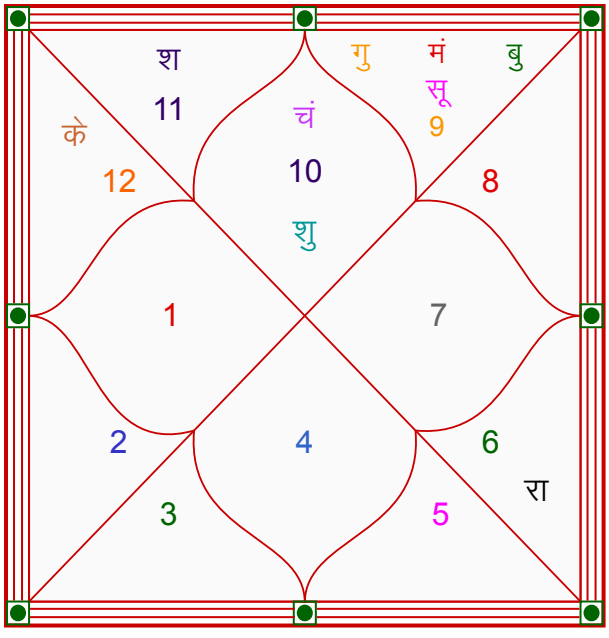

चन्द्र कुंडली

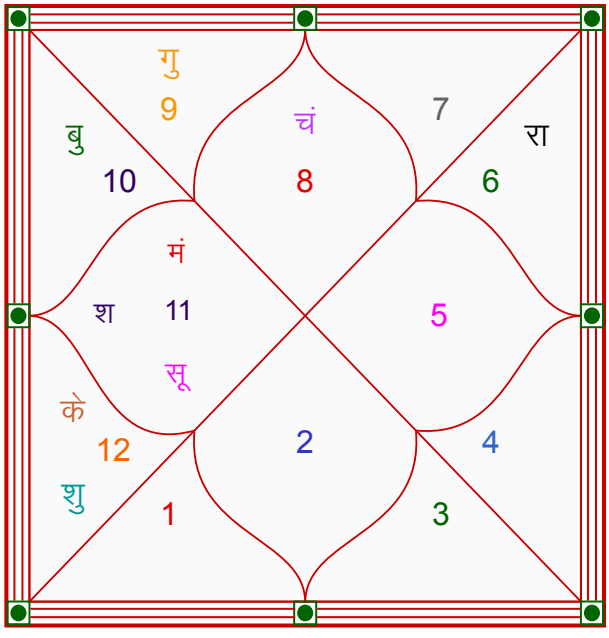

नवमांश कुंडली

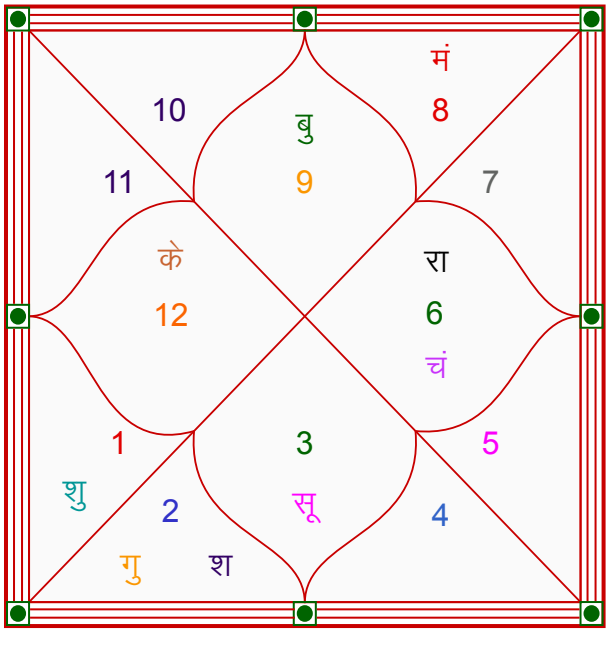

नवमांश कुंडली

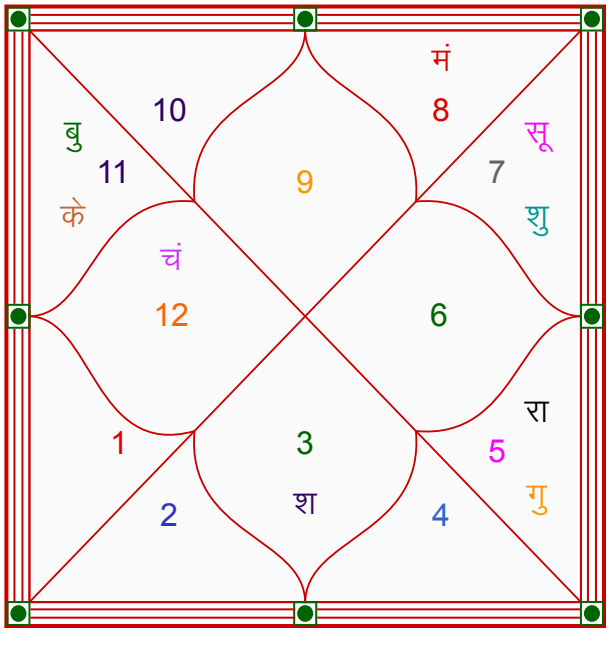

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	——	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	कीटक	2	1.00	——	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	——	भाग्य
योनि	सिंह	मृग	4	1.00	——	यौन विचार
मैत्री	शनि	मंगल	5	0.50	——	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	——	सामाजिकता
भकूट	मकर	वृश्चिक	7	7.00	——	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	——	स्वास्थ्य / संतान
कुल			**36**	**25.00**		

Akash का वर्ग मार्जार है तथा Sneha का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Akash और Sneha का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Akash मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

Sneha मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये ाटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Sneha कि कुण्डली में अष्टम् भाव में कुम्भ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे ादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Akash कि कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनि ।
त्रिषट् एकादशे भौम सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Akash कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Akash तथा Sneha में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।